27–3–67 ओमशांति रात्रीक्लास

प्रदर्शनी के चित्र दिन प्रतिदिन और भी इम्प्रूव हाते जावेंगे। बाबा ने जो अभी बनाया है गीता का भगवान कौन?यह सबसे जरूरी चित्र है। मनुष्य समझेंगे गीता का भगवान कृष्ण नहीं। परमात्मा शिव है।उनको ही ओ गॉड फादर कह कर याद करते हैं। सारा मदार ही इस पर है। विनाशकाले प्रीत बुद्धि और विनाशकाले विपरीत बुद्धि।किसके साथ?शिवपरमात्मा के साथ प्रीत बुद्धि विजयंति।कृष्ण के साथ प्रीत बुद्धि विनश्यन्ति। यह तो यथार्थ बात है। यह चित्र बहुत जरूरी है। पहले2 सभी के पास यह चित्र हो।प्रदर्शनी तो करते हैं ना। दिन प्रतिदिन नये2 विचार निकलते रहेंगे। यह नालेज सबके लिये हैं।गीत ही मुख्य शास्त्र है भारत के प्राचीन ज्ञान और योग का। उस कृष्ण वाली गीता से तो आबरू ही चट हो गई है। कितने गपोड़े बैठ लिखे हैं। बाप कहते हैं तुमने बहुत वेस्ट टाइम किया है भक्तिमार्ग के शास्त्रों पिछाड़ी और कितना खर्चा भी किया है। सर्विस वालों का ही विचार–सागर–मंथन होता है। सर्विस पर ही नहीं हैं तो विचार–सागर भी मंथन नहीं होता है। इसमें आत्मअभिमानी बहुत चाहिए। तुम ब्राह्मण भी सर्विस नहीं करेंगे तो मिलेगा ही क्या?राजधानी स्थापन होती है फिर उसमें तो दास–दासियां भी तो चाहिए ना। वो सब बन रहे हैं। पिछाड़ी में तुम सब समझ जावेंगे कि यह क्या2 बनेंगे। कोई बिचारे हैं मरने पर हैं बाबा से पूछते हैं बाबा हम क्या बनेंगे? तो बाबा झट बता देंगे। बाप के बने हैं तो कहना चाहिए बाबा हम मनसा ,वाचा, कर्मणा आपकी सर्विस में लगेंगे। वो नहीं करते हैं अपनी ही सिर्फ सर्विस करने में लग जाते हैं तो वो बिचारे क्या पद पावेंगे?नम्बरवार पद तो होगा ना। भंडारी अच्छी सम्भालने वाली हो तो वहां भी तो भंडारी नम्बरवार होंगे ना। कोई तो उपर से मुखी होगा उनके नीचे फिर 8–10 और होंगे। बाबा जानते हैं कि सीखने वाले सिखाने वाले से भी उंच चले जाते हैं। सर्विस करने वाले दिल पर चढ़े रहते हैं। लौकिक बाप के दिल पर भी आज्ञाकारी बच्चे ही चढ़ते हैं।जिनमें ज्ञान नहीं है उनमें से जैसे कि बांस आती है। नफरत आती है। कोई भी विकर्म करते हैं ,पतित बन जाते हैं तो दिल को अंदर में बहुत खावेगा। ऐसा बहुत होता रहता है।माला में पिरोये जाना कोई मासीजी का घर नहीं है। देही अभिमानी बन ही नहीं सकते हैं। बहुत फेल होते रहते हैं।विश्व का मालिक बनना कोई कम पद है क्या?पूरी चढ़ती कला तो तब कहेंगे जबकि पूरी विजयमाला में आ जावें। हर एक खुद ही समझ सकते हैं कि मैं कितनी (सर्विस) करता हूँ। प्रदर्शनी में बहुतों से बोलना भी होता है। सब कोई बताते थोड़े ही हैं।आगे चलकर बहुत होशियार हो जावेंगे। यह है बहुत उंच ते उंच कुल। वो है शूद्र। तो हम ब्राह्मण बनने से तुम स्वर्गवासी बन सकते हो। आगे चलकर तुम देखेंगे कि कितने आते हैं। ऋषि–मुनी भी आवेंगे। बाबा जो यह बना रहे हैं चित्र (गीता का भगवान कौन) है? वो बहुत बड़े2 अक्षरों ट्रांसलाइट में भी बनावेंगे। दिन प्रतिदिन नई2 प्वाइंट्स निकलती है ना। समझा जाता है इस तरह तो सब शास्त्र दुर्गति में ले जाने वाले हैं। शिवबाबा जो अब बना रहे हैं उनसे सदगति होनी है। दुर्गति का अब विनाश सामने खड़ा है। विनाश कब होगा यह नहीं बता सकते हैं। बुद्धि से समझा जाता है। यह सुनाना ड्रामा में नहीं है।बाकी हां, जल्दी होगा। इसके लिए जल्दी2 पुरुषार्थ करना है। अगर शरीर छूट जावे तो छोटा बच्चा जाकर बनेंगे। फिर तो इतना पुरुषार्थ कर नही सकेंगे। छोटेपन में आर्गन्स इतने तीखे नहीं होते हैं। 10–11 वर्ष में बुद्धि तेज होती है। योग की यात्रा में तो बहुत–बहुत कच्चे हैं। टूमच देहअभिमानी होने से विकर्म बहुत होते हैं। माया माथा मंड़ लेती है जो कि पता भी नहीं पड़ता है।माया भी ऐसी है जैसे कि चूहा काटता है तो पता भी नहीं पड़ता है। बहुतों को कुछ भी पता नहीं पड़ता हैं उनसे तो अज्ञानी बड़े अच्छे और रॉयल होते हैं। बड़े आज्ञाकारी भी होते हैं। ओम।